जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जो जन्म स्व-पर के कल्याण से सार्थक हुआ हो, वही जन्म कल्याणस्वरूप होता है, इसीकारण तीर्थंकरों का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया जाता है।
ह्न पंच. प्रतिष्ठा महो., पृष्ठ : 148

वर्ष : 28, अंक : 1 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

महाराष्ट्र प्रान्त में धर्म प्रभावना

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर द्वारा संचालित महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्व प्रचार-प्रसार योजना के अन्तर्गत दिनांक 19 दिसम्बर 2004 से 18 फरवरी 2005 तक वाशिम, यवतमाल, अकोला, बुलढ़ाणा एवं जलगांव जिलों के अन्तर्गत 28 गाँवों में पण्डित सुनीलजी बेलोकर, सुल्तानपुर द्वारा धर्मप्रभावना की गई।

प्रत्येक स्थान पर प्रवचन, प्रौढ़कक्षा, बालकक्षा, विधान-पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया; फलस्वरूप अनेक स्थानों पर नवीन पाठशालायें एवं दैनिक स्वाध्याय सभायें प्रारंभ हुई।

ह्न विश्वलोचनकुमार जैनी

जैनमंदिर पर डाक विभाग द्वारा विशेष कवर

सतना (म.प्र.) : भारतीय डाक विभाग द्वारा सतना में आयोजित 2 दिवसीय डाक टिकिट प्रदर्शनी सतनापेक्स-2005 के दौरान जैनधर्म संबंधी एक विशेष कवर तथा विशेष केंसिलेशन जारी किया गया।

सतना में स्थित दिगम्बर जैन मंदिर की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में जारी इस विशेष कवर पर सतना नगर के सबसे प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर का सुन्दर चित्र तथा इस मंदिर के मूलनायक श्री 1008 नेमिनाथ भगवान की मूर्ति के चित्र मुद्रित हैं। मन्दिर की स्थापना माघ सुदी 5, विक्रम संवत् 1937 (सन् 1880) को हुई थी। लगभग उसी समय सतना शहर भी अस्तित्व में आया था। यह मंदिर सतना नगर का प्रथम पूर्ण विकसित शिखरबद्ध मंदिर है। **ह्न सुधीर जैन**

रजत जयन्ती सम्पन्न

बड़ौदा (गुज.) : यहाँ घटियात्रा पोल स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर निर्माण के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती महोत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर के सान्निध्य में ध्वजारोहण एवं रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन हुआ। ज्ञातव्य है कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में अंतिम पंचकल्याणक प्रतिष्ठा उक्त मंदिर की ही हुई थी।

विद्वान एवं कार्यकर्त्ता सम्मेलन

शिरपुर (वाशिम-महा.) : श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थक्षेत्र शिरपुर स्थित दिगम्बर जैन निकलंक धर्मशाला में दिनांक 27 फरवरी, 2005 को महाराष्ट्र प्रांत तत्त्वप्रचार-प्रसार योजना का द्वितीय विद्वान एवं कार्यकर्त्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ; जिसमें 30 विद्वान एवं 70 कार्यकत्ताओं द्वारा विगत 1 वर्ष की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया तथा आगामी समय में तत्त्वप्रचार-प्रसार हेतु महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री माणिकचन्दजी बज, वाशिम ने की। मुख्यअतिथि श्री सुभाषजी अजमेरा अकोला थे। विशिष्ट विद्वानों के रूप में बाल ब्र. केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़ भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल ने तथा आभार प्रदर्शन पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर ऐलोरा ने किया। इसी अवसर पर नूतन कार्यालय, ग्रन्थालय एवं भोजनालय का उद्घाटन श्री नरेश जैन नागपुर द्वारा किया गया। **- सुदीप जैन**

प्रतिमा विराजमान

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं श्री दि.जैन स्वाध्याय मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री दि. जैन नया मंदिर में पण्डित जीवनजी शास्त्री के निर्देशन एवं पण्डित रवि जैन के संचालन में पंच परमेष्ठी विधानपूर्वक श्री शांतिनाथ भगवान एवं सिद्ध परमेष्ठी की प्रतिमा श्री ज्ञानचन्दजी नायक, डॉ. कमलश्री नायक एवं समस्त नायक परिवार द्वारा विराजमान की गई। **ह्न अनुराग जैन**

अब प्रात: 6.35 पर ...

साधना चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित हो रहे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों का समय अब प्रात: 6.45 के बजाय 6.35 बजे हो गया है। अत: समस्त साधर्मीजन समय का ध्यान रखते हुये प्रवचनों का लाभ लें।

साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से मोबाइल नं. 09312506419 पर सम्पर्क करें।

भायंदर पंचकल्याणक पत्रिका

भायंदर पंचकल्याणक पत्रिका

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 25

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

आचार्य अमृतचन्द्र स्वयं इस बात पर विशेष बल दे रहे हैं कि जीवपुद्गलात्मक असमानजातीयद्रव्यपर्याय ही सकल अविधाओं का मूल है। तात्पर्य यह है कि श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र में जो कुछ भी विकृति हुई है, अविधारूप परिणमन हुआ है; उन सबका मूल असमानजातीय-द्रव्यपर्याय में एकत्वबुद्धि है, ममत्वबुद्धि है।

यहाँ केवलज्ञान की बात तो दूर कोई यह भी मानने को तैयार नहीं है कि मैं सम्यग्दर्शन हूँ, मैं केवलज्ञान हूँ, मैं सिद्ध हूँ; लेकिन मैं मनुष्य हूँ, मैं जैनी हूँ, मैं व्यापारी हूँ ह्न ऐसा सभी मान रहे हैं। इसप्रकार यह सिद्ध होता है कि सकल अविधाओं का मूल असमानजातीयद्रव्यपर्याय में एकत्वबुद्धि अर्थात् उसे अपना जानना है।

हमें सुबह से शाम तक उसी की चिन्ता है, उसी के ध्यान में हम दिन-रात मग्न हैं। हम सुबह घूमने के लिए, दौड़ने के लिए जाते हैं; तो वह सब उसके लिए ही करते हैं ? यहाँ घूमने में न तो केवलज्ञान का प्रयोजन है और न सम्यग्दर्शन का ? हम यही चाहते हैं कि हमारी यह असमानजातीय-मनुष्यपर्याय और १०-५ वर्ष सरलता से चल जावे।

यद्यपि यह सत्य है कि गुरुदेवश्री ने गुणपर्यायों पर अधिक वजन दिया था। उनका उन पर वजन देना उचित भी था; क्योंकि उनकी तरफ जगत का ध्यान ही नहीं गया था। वे मात्र असमानजातीयद्रव्यपर्याय के सन्दर्भ में ही सोचते थे। इसलिए वह उस समय की अनिवार्य आवश्यकता थी; परन्तु अब उस पर आवश्यकता से अधिक ध्यान चला गया है; अत: इस पर पुन: ध्यान लाना जरूरी है।

अपने बेटे की शादी हो गई है और वह दिनभर बहू के ही कमरे में घुसा रहे तो माता-पिता को यह समझाने का विकल्प आता है कि 'अब तुम्हारी शादी हो गई है, जीवनभर इसके साथ ही रहना है; परन्तु सब रिश्तेदार हैं तो यह सब अच्छा नहीं लगता है। जो मेहमान आए हैं, उनके साथ भी बैठो; उनसे भी मिलो, यह अच्छी बात नहीं है कि तुम बहू के ही कमरे में घुसे रहो।'

लेकिन यदि वही बेटा अपनी पत्नी से बोले ही नहीं तो उन्हीं माता-पिता के माथे पर सल पड़ जाते हैं। तब वे उसी बेटे को ऐसा समझाने लगते हैं कि , प्रेम से रहो, घूमो-फिरो। क्या दिनभर धंधे-पानी में लगे रहते हो। थोड़ा घूम-फिर आओ, सिनेमा चले जाओ।'

जो सारी जिन्दगी बेटे को सिनेमा जाने से रोकते थे; वे अब उसे ही सिनेमा जाने का उपदेश दे रहे हैं।

एक केशव नाम के कवि हुए हैं; उन्होंने वैराग्यशतक जैसी वैराग्य का वर्णन करनेवाली किताब लिखी है। इसमें वैराग्य का बहुत ही प्रभावोत्पादक वर्णन है। उसे पढ़कर सारे घरवाले, उसका पुत्र भी वैरागी हो गया। वह अपनी पत्नी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता था।

तब केशव कवि की पुत्रवधू बहुत चिन्तित हुई। वह भी कवयित्री थी, विदुषी थी। उसने अपने श्वसुर को सवैया छन्द में एक पत्र लिखा।

उस घर में एक बकरा और बकरी थी। बकरा कामासक्त हो रहा था, मदोन्मत्त हो रहा था।

बकरे की ओर संकेत करती हुई पुत्रवधू कहती है कि रे बकरे अधिक उद्विग्न न हो; नहीं तो मैं श्वसुरजी से कहकर तुझे भी वैरागी बनवा दूँगी।

पुत्रवधू का यह पत्र पढ़कर कवि केशव को सब स्थिति समझ में आ गई, तब उन्होंने श्रृंगाररस की कविताएँ लिखीं; जिसे पढ़कर उनका बेटा पूर्ववत् सामान्य हो गया।

गुरुदेवश्री ने प्रथम विवक्षा पर वजन दिया है और मैं इस दूसरी विवक्षा पर वजन दे रहा हूँ। इसमें किसी प्रकार का विरोध नहीं है।

केवलज्ञान भी पर्याय है एवं इसमें एकत्वबुद्धि मिथ्यात्व है ह्न यह बात बड़े-बड़े विद्वानों के ख्याल में नहीं थी। सम्यग्दर्शन भी पर्याय है, उसमें एकत्वबुद्धि मिथ्यात्व है ह्न यह भी किसी के ख्याल में नहीं था। ध्यान दिलाने पर भी लोग इस विवक्षा को नहीं समझते थे।

गुरुदेवश्री के पुण्यप्रताप से अब यह अवस्था हो गई है कि सब उसी को मानने लग गए हैं एवं जो सकल अविधाओं का मूल है ह्न ऐसी जो असमानजातीयद्रव्यपर्याय है, उस द्रव्यपर्याय में एकत्वबुद्धि को आज स्थूल बात कहने लगे हैं। स्वयं को बड़ा पण्डित माननेवाले कुछ लोग उसकी चर्चा करने में भी शर्म महसूस करते हैं; क्योंकि उनकी दृष्टि में यह स्थूल कथन है।

क्या अमृतचन्द्राचार्य छोटे पण्डित थे ? क्या प्रवचनसार स्थूल बातों का प्रतिपादन करनेवाला ग्रन्थ है ? अरे भाई ! इसी महाग्रन्थ की टीका में अमृतचन्द्राचार्य ने यह लिखा है कि 'जो जीव मनुष्यादिक असमानजातीयद्रव्यपर्यायों में एकत्वबुद्धि धारण करते हैं, वे आत्मा का अनुभव करने में नपुंसक है।'

रास्ते पर एक पर्स पड़ा था, उसमें एक हजार रुपए थे। उस रास्ते पर वह अकेला ही था, कोई और नहीं था। वह चाहता तो उस एक हजार रुपए को ले जा सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया और चिल्लाकर यह कहा कि यह किसका पर्स है, जिसमें एक हजार रुपये पड़े हैं; जिसका हो ले जाओ।

यह सुनकर पास खड़े हुए सभी लोग उसकी प्रशंसा करने लगते हैं, तब यह गद्‌गद् हो जाता है।

पर वह इसकी प्रशंसा कहाँ थी ? यह प्रशंसा उस समय जो ईमानदारी रूप पर्याय प्रगट हुई थी, उसकी ही महिमा थी।

यह आत्मद्रव्य की प्रशंसा नहीं है। यह तो उस समय के विकल्प की प्रशंसा है; जिसमें उसे उस समय पर्स देने का भाव आया और पर्स रखने का विकल्प नहीं आया। वह इसी में 'मैं चौड़ा और बाजार सकरा' हो जाता है; और अभिमान में नाचने लगता है।

वह सोचता है कि देखो, मेरी कितनी प्रशंसा हो रही है। इसे ही पर्यायदृष्टि का उछलना कहते हैं अर्थात् जिस वर्तमान पर्याय में वह है, उस वर्तमान पर्याय की प्रशंसा से इसका रोम-रोम गद्‌गद् हो जाता है। यही पर्यायदृष्टि का उछलना है।

इसप्रकार तू अहंकार द्वारा ठगाया जा रहा है। ठगाया इसलिए जा रहा है; क्योंकि जिसकी प्रशंसा हो रही है, वह तू नहीं है।

किसी ने अपने पुत्र का नाम महावीर रखा। इस व्यक्ति ने अपने पुत्र का

नाम महावीर इसलिए रखा; क्योंकि वह चाहता था कि कम से कम मरते वक्त तो भगवान का नाम याद आए।

यह महावीर महावीर करके मरेगा तो लोग यही कहेंगे कि भगवान का नाम लेकर मरा है; लेकिन वह वस्तुत: अपने बेटे को ही याद करके मरा है। महावीर कहकर उसकी दृष्टि किसके द्रव्य-गुण-पर्याय पर है और जगत की दृष्टि कहाँ है ?

ऐसे ही आचार्य कहते हैं कि जिसके बारे में प्रशंसा हो रही है, वह तू नहीं है।

पर्याय की प्रशंसा में इस जीव का जो उत्साह बढ़ता है; उस उत्साह का होना ही ठगाया जाना है। किसी को ठग नहीं रहा है, वह स्वयं ही ठगाया जा रहा है।

आचार्य आगे स्पष्ट कर रहे हैं कि आत्मव्यवहार तो एकमात्र अविचलित चेतना में विलास करना है। ज्ञानानंदस्वभावी जो भगवान आत्मा है, उसमें रमना ही अविचलित चेतना में रमना है। **(क्रमश:)**

अध्यात्म तरंग छपकर तैयार

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर द्वारा आध्यात्मिक भजनों की पुस्तक अध्यात्मतरंग का पाँचवां संस्करण छपकर तैयार है। भजनों के रचयिता एवं संकलनकर्त्ता पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं संपादनकर्त्ता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली हैं।

प्राप्ति स्थान :

विराग शास्त्री, 702, जैन टेलीकोम, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

दान राशि

1. श्री विजयकुमार जैन विलासपुर की ओर से उनकी सुपुत्री रोली जैन के विवाहोपलक्ष में 101/- रुपये प्राप्त हुये।

2. श्रीमती रुचि जैन धर्मपत्नी डॉ. अनेकान्त जैन, नई दिल्ली को दिनांक 7 फरवरी, 05 को पुत्ररत्न की प्राप्ति के उपलक्ष में 101/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

उक्त दोनों परिवारों को जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक बधाई !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री सर्वोदय स्वाध्याय समिति कोल्हापुर द्वारा आयोजित

39 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, कोल्हापुर

शुक्रवार, दिनांक 13 मई, 2005 से सोमवार दिनांक 30 मई, 2005 तक आयोजित होनेवाले इस प्रशिक्षण-शिविर में पहुँचने के लिये रेल समयसारणी निम्नप्रकार से है ह्न

विभिन्न स्थानों से कोल्हापुर पहुँचने के लिए रेल समयसारिणी

कहाँ से	प्र. समय	दिन	वाया	कहाँ तक	पहुँचने का समय	गाड़ी नम्बर व नाम
दिल्ली (ह.नि.)	5.50	गुरु.	आगरा-भोपाल-पुणे	कोल्हापुर	16.45 (शुक्र)	1054 ह.नि. छत्रपति साहू एक्स.
दिल्ली (ह.नि.)	5.50	सोम.	आगरा-भोपाल-पुणे	मिरज	16.00 (मंगल)	6218 स्वर्ण जयन्ती एक्स.
दिल्ली (ह.नि.)	15.00	प्रतिदिन	आगरा-भोपाल-पुणे	मिरज	22.50	2780 गोवा एक्स.
अजमेर	5.35	शुक्र/शनि	अहमदाबाद-कल्याण-पुणे	मिरज	10.30 शनि/सोम	6509 अजमेर-बेंगलोर एक्स.
अहमदाबाद	14.35	मंगल	अहमदाबाद-कल्याण-पुणे	मिरज	10.30 बुध	6505 गाँधीधाम-बेंगलोर
अहमदाबाद	14.35	गुरु/शनि	अहमदाबाद-कल्याण-पुणे	मिरज	10.30 शुक्र/रवि	6507 जोधपुर बेंगलौर
नागपुर	10.40	प्रतिदिन	अकोला-पुणे-मिरज	कोल्हापुर	12.45 दूसरे दिन	1040 महाराष्ट्र एक्सप्रेस
मुंबई (सीएसटी)	9.00	प्रतिदिन	पुणे-मिरज	कोल्हापुर	21.40	1029 कोयना एक्सप्रेस
मुंबई (सीएसटी)	17.50	प्रतिदिन	पुणे-मिरज	कोल्हापुर	6.15	1023 सह्याद्री एक्सप्रेस
मुंबई (सीएसटी)	20.25	प्रतिदिन	पुणे-मिरज	कोल्हापुर	7.30	1011 महालक्ष्मी एक्सप्रेस
दादर	22.45	प्रतिदिन	पुणे	मिरज	8.10	1017/1035 चालुक्य/शरावती एक्स.
पुणे	23.10	शनिवार	ह्न	मिरज	5.15 रविवार	1097 पुणे-एर्नाकुलम
तिरुपति	19.00	प्रतिदिन	हैदराबाद-हुबली-मिरज	कोल्हापुर	16.20	7430 रायलसीमा एक्स.

मिरज से कोल्हापुर के लिए पैसेंजर समयसारिणी

मिरज	8.40	प्रतिदिन	हातकणंगले	कोल्हापुर	10.15 करीब	1621 सातारा-कोल्हापुर पैसेंजर
मिरज	14.00	प्रतिदिन	हातकणंगले	कोल्हापुर	15.45 करीब	1627 मिरज-कोल्हापुर पैसेंजर
मिरज	17.00	प्रतिदिन	हातकणंगले	कोल्हापुर	18.45 करीब	1607 मिरज-कोल्हापुर पैसेंजर
मिरज	18.30	प्रतिदिन	हातकणंगले	कोल्हापुर	20.15 करीब	1627 पुणे-कोल्हापुर पैसेंजर

नोट : 1) कोल्हापुर स्टेशन **छत्रपति शाहू महाराज टर्मिनल** के नाम से जाना जाता है।

2) मिरज से बस मार्ग द्वारा कोल्हापुर मात्र 40 कि.मी. पर है, बससेवा भी हरसमय उपलब्ध रहती है। पुणे व मुम्बई से भी बस सेवा उपलब्ध है।

भायंदर पंचकल्याणक पत्रिका

भायंदर पंचकल्याणक पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के (वर्ष 1980) चतुर्थ बैच के स्नातक डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन वरिष्ठ अध्यापक सुजानगढ़ (राज.) को जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाड़नूँ द्वारा **समयसार का दार्शनिक परिशीलन** विषय पर पीएच. डी. की उपाधि प्रदान की गई। शोध कार्य के निर्देशक डॉ. जिनेन्द्र जैन, लाडनूं वरिष्ठ व्याख्याता थे।

भगवान महावीर दि. जैन विद्वत् समिति के महामंत्री डॉ. अरविन्दजी के अनुसार यह शोधकार्य शिक्षागुरु डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के चिन्तन की सुप्रभावना का एक लघु सुफल है। डॉ. जैन की इस उपलब्धी पर जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न अनुराग जैन**

शाखा का गठन

गुना (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन शाखा गुना के द्विवार्षिक चुनाव परम्परागत पद्दति अनुसार सम्पन्न हुये; जिसमें सर्व सम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गये; जिसमें **अध्यक्ष –** श्रीमती सुधा राजकुमार बांझल, **उपाध्यक्ष –** श्रीमती कुसुम अशोक जैन, **सचिव –** श्रीमती स्नेहलता विनोदकुमार जैन, **कोषाध्यक्ष –** श्रीमती मधु चिमनलाल जैन।

अभक्ष्य त्यागकर विजय चिरस्मरणीय बनाई !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बम्बोरा-उदयपुर के प्राध्यापक डॉ. महावीरप्रसादजी जैन को राजस्थान राज्य के बलीचा ग्राम-धारियावाद पंचायत समिति तथा गावडापाल ग्राम-सलूम्बर पंचायत समिति के ग्रामपंचायत चुनावों में रिटर्निंग ऑफिसर के रूप में नियुक्त किया गया था ।

इन चुनावों में नवनिर्वाचित सदस्यों को उनकी यादगार-विजय बनाने के लिये डॉ. महावीरप्रसादजी ने बीडी-सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा, शराब, अण्डा, मांस-मछली आदि अभक्ष्य पदार्थों का अपनी-अपनी यथाशक्तिनुसार त्याग करने हेतु उनसे निवेदन किया; फलस्वरूप बलीचा ग्रामपंचायत की नवनिर्वाचित सरपंच श्रीमती मोहनी मीणा, उपसरपंच श्री सत्यनारायण चौधरी, वार्डपंच श्रीमोहनलाल प्रजापत, श्री केवा डाँगी, श्री शम्भुलाल मीणा, श्रीमती सोवनी मीणा, श्रीमती वरदी मीणा, श्री लिम्बाराम मीणा, श्रीमती वगदी मीणा, श्री केशुलाल मीणा, श्री मानमल मीणा, श्री लालचन्द मीणा, श्री वरदीचन्द डाँगी तथा गावडापाल (सलूम्बर) ग्रामपंचायत के नवनिर्वाचित सरपंच श्रीराम मीणा, उपसरपंच श्री मोहन मीणा, वार्डपंच श्री रतनलाल मेघवाल, श्री कालूसिंह, श्रीमती हीरकी मीणा, श्री नाया मीणा, श्री हूरजी मीणा, श्रीमती अमरी मीणा, श्री काणा मीणा, श्रीमती झमकू मीणा, श्रीमती लक्ष्मी, श्री दला मीणा ने अपनी विजय को चिरस्मरणीय बनाये रखने के लिये कुछ लोगों ने आजीवन तथा कुछ ने सप्ताह में किसी विशेष एक या दो दिन आजीवन इन अभक्ष्य पदार्थों त्याग किया।

उक्त सभी विजेताओं ने जिनवाणी पर हाथ रखकर समस्त जनता के सामने उक्त अभक्ष्य पदार्थों को छोडने की प्रतिज्ञा ली।

वैराग्य समाचार

1. किशनगढ़ निवासी स्व.श्री लादूलालजी पहाड़िया की धर्मपत्नी स्व. पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी की बहिन श्रीमती फूलबाई पहाड़िया का 19 मार्च, 2005 को 92 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप जीवन पर्यंत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं उनके तत्त्वज्ञान से जुड़ी रहीं। जयपुर शिक्षण शिविर में बराबर आया करती थीं। ज्ञातव्य है कि जयपुर-खानियां तत्त्वचर्चा में भी आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

आपकी स्मृति में आपके सुपुत्र श्री सुशीलजी पहाड़िया की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 2001/- रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

2. सरदारशहर निवासी श्री शांतिलालजी सेठिया पुत्र श्री जसकरणजी की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलाजी सेठिया का दिनांक 3 मार्च, 2005 को अल्पायु में ही शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आपमें बचपन से ही धार्मिक संस्कार थे, आपका जीवन भी संयम व समतामय था। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1001/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

3. राजकोट निवासी श्रीमती शारदाबेन रतिलालजी का दिनांक 15 फरवरी, 05 को देहावसान हो गया है। आपका सम्पूर्ण जीवन गुरुदेवश्री एवं उनके द्वारा प्ररूपित तत्त्वज्ञान के सान्निध्य में ही व्यतीत हुआ। आप राजकोट दिग. जैन महिला मण्डल की संस्थापक थीं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही हमारी मंगल कामना है। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

टीकमगढ़ (म.प्र.) : श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का वार्षिकोत्सव दिनांक 18 फरवरी से 22 फरवरी तक 170 तीर्थंकर विधानपूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, रहली ने सम्पन्न कराये। **ह्न सुरेश जैन, पिपरा**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (प्रथम) 2005
J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127